



मुगलों की प्रशासनिक संरचना : एक ऐतिहासिक अध्ययन

बेबी कुमारी

इतिहास विभाग

महात्मा गाँधी महाविद्यालय, सुंदरपुर, दरभंगा

सार :

कार्य संचालन का प्रबंधन ही प्रशासनिक कहलाता है। भले ही पूरा साम्राज्य ढह जाए और दूसरे शासक जगह ले लें, लेकिन किसी देश का प्रशासन अनिश्चित काल तक चलता रहेगा। यह न तो क्रांति द्वारा परिवर्तन के लिए अतिसंवेदनशील है, न ही इसे उथल-पुथल द्वारा उखाड़ा जा सकता है। भारत पर शासन करने वाले कई राजवंश थे, लेकिन मुगल वंश को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इसने सबसे लंबे समय तक भारतीय धरती पर अपना आधिपत्य जमाए रखा और इसकी अपनी अनूठी प्रशासनिक संरचना थी। 1526 और 1707 के बीच, मुगलों ने हिंदू संस्कृति के साथ-साथ हिंदू इतिहास पर भी अपनी छाप छोड़ी। मुगलों ने कुल 181 वर्षों तक भारत पर शासन किया, इस अवधि के दौरान देश में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। मुगल साम्राज्य इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि इसने व्यावहारिक रूप से पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को अपने नियंत्रण में एकजुट किया और उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों को उनके स्थलीय और तटीय वाणिज्यिक नेटवर्क को बढ़ाकर एक साथ लाया। इसके अलावा, यह सांस्कृतिक प्रभाव के लिए प्रसिद्ध था। यह गुप्त वंश के पतन के बाद भारत में उभरने वाला पहला प्रमुख साम्राज्य माना जाता था। अध्ययन मुगल प्रशासनिक पदानुक्रम में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए, शोध ने गुणात्मक दृष्टिकोण के साथ वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और विप्लेशनात्मक पद्धति के संयोजन का उपयोग किया।

मुख्य-शब्द: प्रशासन; संरचना; राजस्व; स्थानीय; केंद्र; भूमि; बंदरगाह; न्यायपालिका।

परिचय :

मुगलों का प्रशासन इस लेख की चर्चा का प्राथमिक केंद्र होगा। साम्राज्य के विभिन्न वर्गों पर निगरानी और अधिकार का प्रयोग करने के साधन के रूप में मुगल प्रशासन की स्थापना मुगल साम्राज्य का प्राथमिक उद्देश्य था। मुगल लगभग दो शताब्दियों तक भारतीय उपमहाद्वीप पर अपना ठोस अधिकार बनाए रखने में सक्षम थे क्योंकि उन्होंने एक ऐसा साम्राज्य बनाया था जिसमें न केवल विशाल राजनीतिक शक्ति थी बल्कि एक मजबूत प्रशासनिक संरचना भी थी जो कुशल

संचालन के लिए आवश्यक समर्थन प्रदान करती थी। मुगलों द्वारा प्रशासनिक चिंताओं को अत्यंत गंभीरता और विस्तार से ध्यान दिया जाता था। इसमें सत्ता के समेकन से लेकर अर्थव्यवस्था और संस्कृति के विस्तार के लिए अनुकूल परिस्थितियों की स्थापना तक सब कुछ शामिल था। मुगल बादशाहों ने खुद को धरती पर ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में देखा और अपनी शक्ति को दिव्य माना। उन्होंने दावा किया कि वे "ईश्वर की छाया", "दृश्यमान ईश्वर", "ईश्वर के वकील", "अपनी

Corresponding Author : बेबी कुमारी

E-mail : babykumari2712@gmail.com

Date of Acceptance : 09.07.2024

Date of Publication : 30.11.2024

भूमि के खतीफा" और इस तरह की अन्य उपाधियाँ हैं। अकबर के काल के प्रसिद्ध इतिहासकार और विद्वान अबुल फजल ने आइन-ए-अकबरी की प्रस्तावना में कहा, "ईश्वर की दृष्टि में राजश्व से बड़ी कोई गरिमा नहीं है और जो बुद्धिमान हैं, वे इसके शुभ झरने से पीते हैं।" "ईश्वर की दृष्टि में राजश्व से बड़ी कोई गरिमा नहीं है।" इसके अलावा, उनका मत था कि "राजश्व ईश्वर से निकलने वाला प्रकाश है, जैसे सूर्य से किरण।"

शोध उद्देश्य :

एक प्रशासनिक निर्माण एक ढांचा है जो यह बताता है कि किसी क्षेत्र के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कुछ अभ्यासों को कैसे निर्देशित किया जाता है। डिजाइन अधिक स्पष्टता देगा, धारणाओं की देखरेख करने में सहायता करेगा, बेहतर स्वतंत्र दिशा को सशक्त करेगा और स्थिरता देगा। भारत में मुगल काल ने देश के सामाजिक, आर्थिक और सामाजिक प्रबंधन, विनिमय, जीवन पैली के क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। इन सभी क्षेत्रों का प्रशासन मुगल शासकों की पहल पर विभिन्न अधिकारियों द्वारा नियंत्रित किया जाता था। इस तरह अध्ययन ने भारतीय धरती पर मध्यकाल के दौरान मुगलों की प्रशासनिक संरचना को उजागर किया।

अध्ययन पद्धति :

इस कार्य के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, वर्तमान जांच के लिए आवश्यक अधिकांश डेटा प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से आए हैं। डेटा का संग्रह मध्यकालीन युग में भारत में मुगलों द्वारा बनाए गए प्रशासनिक ढांचे पर शोध को सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से किया गया था। अध्ययन का ढांचा ऐतिहासिक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक तरीकों के उपयोग के माध्यम से स्थापित

किया गया था, जिससे एक वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष पर पहुंचा जा सके।

चर्चा और परिणाम :

प्रशासन उस प्रक्रिया या गतिविधि को संदर्भित करता है जो कंप्यूटर सिस्टम के संचालन में शामिल है। राजा बाबर मुगल साम्राज्य की स्थापना के लिए जिम्मेदार व्यक्ति था। साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों पर निगरानी और अधिकार का प्रयोग करने के साधन के रूप में मुगल प्रशासन की स्थापना करना मुगल साम्राज्य का प्राथमिक उद्देश्य था। स्थिति पर पूर्ण नियंत्रण बनाए रखने के लिए मुगल साम्राज्य ने प्राथमिक प्रशासनिक प्राधिकरण के रूप में कार्य किया। सत्रहवीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य पूरी दुनिया में सबसे शाक्तिशाली आर्थिक और विनिर्माण शाक्ति थी। साम्राज्य के इस पूरे हिस्से पर नियंत्रण और शासन करने के लिए, सरकार के भीतर विभिन्न पदों पर बड़ी संख्या में अधिकारियों को नियुक्त किया गया था। मुगल शासन अन्य प्रकार के शासन की तुलना में काफी हद तक केंद्रीकृत था। मुगल सम्राट मुगल समाज और शासन में सर्वोच्च अधिकारी के रूप में कार्य करता था। मुगल सम्राटों के प्रशासन में, साम्राज्य के विस्तार में विभिन्न समय पर कई मंत्रियों की नियुक्ति की गई थी। मुगल प्रशासनिक पदानुक्रम के भीतर रैंक मुगल प्रशासन के कई स्तरों को आगे कई उप-भागों में विभाजित किया गया था। इन कई सरकारी विभागों के भीतर, विभिन्न अधिकारी पदों पर नियुक्तियाँ की जाती थीं। मुगल साम्राज्य के भीतर मौजूद मुगल प्रशासन के स्तरों की सूची निम्नलिखित है। केंद्र में प्रशासन मुगल साम्राज्य लगभग पूरे समकालीन भारत पर अपना अधिकार रखता है। मुगल साम्राज्य ने स्थिति पर पूर्ण नियंत्रण बनाए रखने के लिए प्राथमिक

प्रशासनिक प्राधिकरण के रूप में कार्य किया। सम्राट सम्राट को मुगल सरकार में सर्वोच्च पद का अधिकारी माना जाता था और पूरे मुगल साम्राज्य पर पूर्ण शक्ति निहित थी। मुगल शासन में, सम्राट का आदेश सर्वोच्च और सबसे आधिकारिक आदेश था। वकील और वजीर के पास नागरिक और सैन्य दोनों तरह के अधिकार थे, और वजीर को दूसरे नाम दीवान से भी जाना जाता था। बाद में, मुगल साम्राज्य के राजा अकबर के शासनकाल के दौरान, उन्होंने अपने वित्तीय अधिकार के वकील को पदच्युत कर दिया और इसे दीवान कुल को दे दिया, जो प्रशासन के वित्त मंत्री के रूप में कार्य करता था। यह घटना उस समय अवधि के दौरान हुई थी। दीवानी कुल मुगल प्रशासन में वित्तीय मंत्री थे। उन्होंने उस समय अवधि के दौरान सभी वित्तीय गतिविधियों और भुगतानों की देखरेख की। मीर बख्शी, जिन्हें मीर बख्शी के नाम से भी जाना जाता है, मुगल साम्राज्य में एक केंद्रीय व्यक्ति हैं और वहां एक आवश्यक भूमिका निभाते हैं। वह भुगतान, नियुक्तियों और सैनिकों से संबंधित किसी भी अन्य चीज़ का प्रभारी है। मीर समन, जिन्हें खान समन के नाम से भी जाना जाता है, जब वे जीवित थे, तो क्रय विभाग के प्रभारी थे। सद्र—उस सुदूर या सद्र ने चर्च विभाग (सुदर) पर शासन किया, जो धर्मार्थ दान के लिए जिम्मेदार था।

प्रांत का प्रशासन :

अकबर के शासनकाल के दौरान, उन्होंने मुगल साम्राज्य के प्रशासनिक प्रभागों के रूप में 12 सूबों की स्थापना की। प्रत्येक सूबे के लिए मानक प्रशासनिक मॉडल को अपनाना इन सूबों पर नियंत्रण और विनियमन करने के लिए किया गया था। मुगल प्रशासन के प्रांत स्तर को बनाने वाले घटक निम्नलिखित हैं: दीवान—दीवान एक सूबा के सभी कार्यों का प्रमुख होता था, विशेष रूप से

राजस्व विभाग का, और केंद्रीय स्तर पर रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार होता था।² सिपाह सालार नाजिम का पद एक ऐसा पत्र लिखने के लिए स्थापित किया गया था जो दीवान को स्वतंत्र बनाए और उसे सुभद्रा की जिम्मेदारी दे। बख्शी—बख्शी सूबा के स्तर पर मुगल साम्राज्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। वह यह सुनिश्चित करने का प्रभारी है कि सूबा में सैनिकों को उनके भुगतान, नियुक्तियाँ और कोई अन्य संबंधित कर्तव्य मिलें। सूबा में शाही डाक प्रणाली की संचार प्रणाली दारोगा—दारोगा—आई डाक के अधिकार क्षेत्र में थी, जो इस पद का प्रभारी था। डाक चौकियों में, यह वह प्रणाली थी जिसका उपयोग संदेश भेजने और प्राप्त करने के लिए किया जाता था। फौजदार जिले का प्रशासनिक प्रमुख था, और कोतवाल को कार्यकारी और मंत्रिस्तरीय जिम्मेदारियों को संभालने के लिए नामित किया गया था। साथ में, उन्हें फौजदार और कोतवाल के रूप में जाना जाता था।³

स्थानीय स्तर पर प्रशासन :

सरकार, परगना और गाँव के स्तर पर प्रत्येक की अपनी—अपनी प्रशासनिक जिम्मेदारियाँ थीं। सरकार स्तर: फौजदार और मालगुज़ार को सरकार स्तर पर दो सबसे महत्वपूर्ण पद माना जाता था। फौजदार प्रशासन के प्रमुख के रूप में कार्य करता था और लोगों के जीवन और सामान की सुरक्षा के लिए जवाबदेह था। मालगुज़ार कर एकत्र करने का प्रभारी था।⁴ परगना स्तर पर, परगना सरकार के निचले हाथ में किए जाने वाले कार्यों के लिए जिम्मेदार होते हैं। शिक्कदार परगना में अमलगुज़ार के कार्यकारी अधिकारी के रूप में कार्य करता है। गाँव का स्तर मुगल प्रशासन की सबसे निचली प्रशासनिक इकाई है। गाँव के शासन में गाँव के स्तर पर, मुक़द्दम ने मुखिया के रूप में कार्य किया।

पटवारी गाँव के वित्तीय रिकॉर्ड को बनाए रखने और राजस्व पर नज़र रखने के प्रभारी थे।⁵

शाहर, किले और बंदरगाह का प्रशासन :

मुगल प्रशासन में, यह विभाग प्रशासन के लिए कस्बों (शाहरों), किलों और बंदरगाहों से संबंधित कर्तव्यों को संभालने के लिए जिम्मेदार था। ये अधिकारी इस प्रशासन का निर्माण करते हैं: नगरपालिका स्तर पर, लोगों और उनकी संपत्ति की सुरक्षा प्रदान करना कोतवाल की प्राथमिक भूमिका है। कोतवाल वह होता है जो अज्ञात व्यक्ति का रिकॉर्ड रखता है और बाहरी लोगों को परमिट देता है। अलादर किलों के प्रशासन का प्रभारी था और किले की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार था, जो वास्तव में उसके आवंटित क्षेत्र में आता था। मुतसद्दी बंदरगाहों का गवर्नर था, और उसकी जिम्मेदारियों में करों का संग्रह और बंदरगाहों में होने वाले संचालन की देखरेख शामिल थी।⁶

नगर प्रशासन:

बड़े शहर "कोतवाल" की देखरेख में थे, जिनका प्राथमिक कर्तव्य शांति बनाए रखना, सफाई की उचित व्यवस्था करना, व्यापारियों पर नज़र रखना, वेशाओं और शराबियों पर कड़ी निगरानी रखना और शाहर में विदेशियों की देखभाल करना था। बड़े शहर "कोतवाल" की देखरेख में थे, जिनका प्राथमिक कर्तव्य शांति बनाए रखना, सफाई की उचित व्यवस्था करना, व्यापारियों पर नज़र रखना, वेश्याओं और शराबियों पर कड़ी निगरानी रखना और शहर में विदेशियों की देखभाल करना था।⁷

न्याय व्यवस्था:

मुगल वंश के सम्राट निष्पक्ष और न्यायप्रिय शासक थे। अपीलकर्ताओं के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिए, जहाँगीर ने अपने महल के बाहर एक सोने की चेन रख

दी। अकबर ने न्यायपूर्ण न्यायिक व्यवस्था स्थापित करने की दिशा में प्रयास किए हैं। सम्राट साम्राज्य के सर्वोच्च न्यायालय की अध्यक्षता करता था, जिसे शाही न्यायालय के रूप में भी जाना जाता था। केंद्र में मुख्य काजी और सरदार खड़े थे, जो इस्लामी कानून के अनुसार न्याय करते थे।⁸ प्रांतों में फौजदारी मामलों का निर्धारण सूबेदारों द्वारा किया जाता था, जबकि दीवानी मामलों का निर्णय दीवानों द्वारा किया जाता था। दीवानी मामलों की सुनवाई और निर्णय प्रांत के काजियों द्वारा किया जाता था। भूमि से किराया: भूमि कर मुगल सरकार के लिए आय का प्राथमिक स्रोत था। अकबर के वित्त मंत्री टोडरमल ने अकबर के शासनकाल के दौरान "ज़ब्ती", "गल्लाबख्श" और "नस्क" प्रणाली विकसित की। ये भूमि राजस्व के तीन प्राथमिक रूप थे। जब इसे पहली बार पेशा किया गया था, तो भूमि के लिए मानक माप इकाई के रूप में "गज-ए-इलाही" का उपयोग करने का निर्णय लिया गया था। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भूमि राजस्व हमेशा कुल उत्पादन का एक तिहाई निर्धारित किया गया था, भले ही राशि राजा द्वारा निर्धारित की गई थी।⁹

सरकार के लिए आय के अन्य स्रोतों में "नजराना" शामिल था, जिसका अर्थ था आर्थिक मुआवज़ा, "खाम", जिसका अर्थ था लूटा हुआ खजाना (1/5), कुलीनों द्वारा दिया जाने वाला वार्षिक कर, और बाज़ार, फ़ेरी, जंगल, कारीगरों, नमक, नील और अन्य चीज़ों पर लगाए जाने वाले कर। भूमि राजस्व भी सरकार के लिए आय का एक स्रोत था। अकबर ही वह व्यक्ति था जिसने मुगलों के प्रशासनिक तंत्र को उसका निश्चित आकार दिया। इसकी संरचना का एक बड़ा हिस्सा फ़ारसी और अरब प्रशासनिक प्रणालियों से लिया गया था, जिनमें से

दोनों में एक मजबूत सैन्य स्वाद था। भले ही मुगल सम्राट के पास पूर्ण नियंत्रण था, लेकिन अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल में पूरा देशा शांतिपूर्ण और समृद्ध था। यह अकबर के शासनकाल के दौरान विशेष रूप से सच था।¹⁰

मुगल प्रशासन के विभाग :

मुगल प्रशासन में, राजस्व विभाग के रूप में जाना जाने वाला एक अलग विभाग विशेष रूप से करें और राजस्व एकत्र करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था। यह साम्राज्य अपनी ज़बती प्रणाली के लिए प्रसिद्ध था, जिसमें उत्पादित फसल की कीमत में राज्य का हिस्सा उत्पाद की कीमत के एक तिहाई के बराबर होता था।¹¹ मुगल प्रशासन ने भूमि से धन एकत्र करने के लिए एक मानक दर स्थापित की। सैन्य विभाग के अधिकारी जो सैनिकों की गतिविधियों के लिए जिम्मेदार होते हैं, वे केंद्रीय और सूबा दोनों स्तरों पर बख्शी होते हैं और मनसबदार सैनिकों, घुड़सवारों और सेना के अन्य विभागों के प्रमुख होते हैं। मनसबदार दाखिली और अहादीस का प्रभारी होता है।¹²

निष्कर्ष :

मुगल प्रशासन मुख्य रूप से केंद्र आधारित प्रशासन था। मुगल साम्राज्य का मुख्य उद्देश्य साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों पर नज़र रखने और शासन करने के लिए मुगल प्रशासन की स्थापना करना था। मुगल प्रशासन ने मुगल साम्राज्य को 12 सूबों में विभाजित किया। इन सूबों को नियंत्रित और विनियमित करने के लिए, प्रत्येक सूबा के लिए एक समान प्रशासनिक मॉडल अपनाया गया था।

संदर्भ :

1 अली, एम. ए. (1978) रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल की मुगल साम्राज्य की व्याख्या की ओर,

110(1), 38–49।

- 2 अल्वी, एस. एस. (1989) मुगल सम्राट जहाँगीर (1605–27) के शासनकाल के दौरान धर्म और राज्य: गैर-न्यायिक दृष्टिकोण, दिल्ली सल्तनत एवं कानूनी व्यवस्था: एक ऐतिहासिक अध्ययन स्टुडिया इस्लामिया, 95 – 119।
- 3 बिलाल, एफ. (2015) भारत का मुगल राजवंश और पैतृक नौकरशाही। जर्नल ऑफ द रिसर्च सोसाइटी ऑफ पाकिस्तान, 52(1)।
- 4 ब्लेक, एस. पी. (1979) मुगलों का पैतृक – नौकरशाही साम्राज्य। जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज, 39(1), 77–94।
- 5 ब्लेक, एस. पी. (2002) शाहजहानाबाद: मुगल भारत में संप्रभु शाहर 1639–1739 (सं.49), कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- 6 चौधरी, आर. ए. (2017) मुगल और भारत में घोड़ों का व्यापार, 1526–1707, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिस्ट्री एंड कल्चरल स्टडीज, 3(1), 1–18।
- 7 कोहन, बी.एस. (1960). भारत पर प्रारंभिक ब्रिटिश प्रभाव: बनारस क्षेत्र का एक केस स्टडी, जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज, 19(4), 418–431।
- 8 गुहा, एस. (2015). मुगल भारत की अर्थव्यवस्था पर पुनर्विचार: पार्श्व दृष्टिकोण, जर्नल ऑफ द इकोनॉमिक एंड सोशल हिस्ट्री ऑफ द ओरिएंट, 58(4), 532–575।
- 9 हसन, एफ. (2004). मुगल भारत में राज्य और स्थानीयता: पश्चिमी भारत में सत्ता संबंध, सी. 1572–1730 (सं. 61), कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- 10 नईम, एम.ए. (1985) निजामुल मुल्क आसफ जाह के अधीन दक्कन का मुगल प्रशासन, नई दिल्ली, जैको।

- 11 पीरभाई, एम.आर. (2016) मुगल साम्राज्य में
इस्लामी कानून का इतिहासलेखन, ऑक्सफोर्ड
हैंडबुक ऑफ इस्लामिक लॉ में।
- 12 रिचर्ड्स, जे. एफ. (1993) मुगल साम्राज्य (खंड
5), कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।